Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2021, VOL- 8/65

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन

गणेश शुक्ल

शोध छात्र,शैक्षिक अध्ययन विभाग , शिक्षा विद्यापीठ , महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय पूर्वी चंपारण -845401

ई मेल: ganeshkpuc91@gmail.com

Paper Received On: 21 JUNE 2021

Peer Reviewed On: 30 JUNE 2021

Published On: 1 JULY 2021

Abstract

वर्तमान समय मे पर्यावरण सबसे बड़ी गंभीर समस्या है। अब वह समय आ गया है जब हमें सावधानी से अपने प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करना चाहिए। पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी ने पिछले तीन चार दशकों के दौरान तीव्र विकास किया है। आज के समय में मनुष्य के अंदर आधुनिकीकरण एवं विकास की लालसा की वजह से पर्यावरण पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। प्रदूषण से लेकर ओजोन क्षरण तक हो या फिर भूमिगत जल संदूषण से लेकर ग्लोबल वार्मिंग हो, सभी मनुष्य के द्वारा किया जा रहा है । चारो ओर से पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न दिखाई दे रही है अतः इन सभी समस्याओं का समाधान अति आवश्यक है । आज की महान आवश्यकता वे लोग है जो बुद्धिमान और अपने आस-पास के वातावरण के लिए सजग है तथा उसके लिए सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक ,कदम उठाने के लिए तैयार है । पृथ्वी पर जीवन यापन कर रहे सिर्फ मानव जाति के लिए नही अपितु सम्पूर्ण जीव के जरूरत एवं इच्छाओ के पूर्ति के लिए संतुलित वातावरण नितांत आवश्यक है ।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

समस्या की उत्पत्ति – वर्तमान सदी में औद्योगिक मानव ने अपने अंधाधुंध विकास के पीछे पर्यावरण में होने वाली क्षति को आसानी से भुला दिया है इसका प्रमाण हमें आज पर्यावरण के दिन-प्रतिदिन गिरते स्तर से मिल रहा है | |पर्यावरण असंतुलन से सारी धरती त्रस्त हो रही है वायुमंडल दूषित हो रहा है |ओजोन की रक्षा पट्टी कमजोर होने से तापमान निरंतर बढ़ता जा रहा है, मौसम का क्रम बिगड़ता जा रहा है | भूमि की उर्वरा शक्ति तेजी से क्षीण होती जा रही है |भू -क्षरण कटाव अकाल बाढ़ की विभीषिका तेजी से बढ़ रही है| बंजर क्षेत्र का रेगिस्तान बढ़ते जा रहे हैं, जिससे भविष्य की सुरक्षा तथा सुख शांति पर प्रश्नचिन्ह लगने लगा है| अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि मानव को असंतुलित पर्यावरण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से अवगत कराया जाए | परंपरागत और रूढ़िवादी समाज अपने नागरिकों को संस्कृति के हस्तान्तरण के साथ साथ पुरातन अंधविश्वास और मान्यताओं को भी हस्तांतरित करता है| जिससे शिक्षा की गत्यात्मकता मंद हो जाती है तथा सामाजिक परिवर्तनों को सही दिशा नहीं मिल पाती है , यह पुरातन अंधविश्वास प्रायः अतार्किक और अप्रमाणिक होते हैं | इनके अमूर्त स्वरूप के कारण इनकी सत्यता की परख भी आसानी से नहीं होती है, जिससे नवीन दृष्टिकोणों को उचित सम्मान और

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बल नहीं मिल पाता जितना मिलना चाहिए | आज के युवाओं से प्रश्न पूछा जाता है कि उन्हें टीवी पर क्या देखना पसंद है तोअधिकतर युवा किसी धारावाहिक या फिल्म को अपनी पहली पसंद मानते हुए जवाब देते हैं

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से प्रश्न उठता है कि इस पर्यावरण प्रदूषण में पर्यावरण जागरूकता के लिए क्या कारक जिम्मेदार हैं संभवत शिक्षा द्वारा इस समस्या को दूर किया जा सकता है |विद्यार्थी भी उसी समाज के भावी उत्तरदाई होने हैं जोकि शिक्षा प्राप्ति हेतु विद्यालय में प्रवेश लेते हैं| अतः समस्या उत्पन्न होती है कि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का पता किस प्रकार लगाया जाए |

अनुसंधान का महत्व- किसी भी कार्य को करने से पूर्व कार्य का महत्व जान लेना आवश्यक होता है वर्तमान काल में पर्यावरणीय गुणवत्ता में आई हास की समस्या ने वैज्ञानिकों समाजशास्त्रियों एवं शिक्षाविदों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है जिसके फलस्वरूप इस गंभीर समस्या से निपटने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है | जिसके अंतर्गत पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया जिससे बालक में बचपन से पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाई जा सके | परंतु पर्यावरण की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है जिसका सीधा सा अर्थ है कि अभी भी लोगों में पर्यावरण के प्रति संचेतना का अभाव है या फिर जान -बूझकर पर्यावरण से खिलवाड़ कर रहे हैं |वर्तमान पीढ़ी के किशोर जो भावी समाज के निर्माता हैं,वे पर्यावरण के प्रति क्या सोचते हैं, अथवा पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए कितने प्रयासरत होंगे | इस शोध के द्वारा प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण शोध एवं उनके भविष्य के विचारों एवं योजना पर प्रकाश पढ़ सकेगा| चूकि पर्यावरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग है ,और हम सब इसी पर्यावरण के अंग हैं | अतः इसके बारे में पूरी जानकारी होना , उसका संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का ना केवल उत्तरदायित्व है अपितु कर्तव्य भी है| और वह आपने इस कर्तव्य से मुंह मोड़ नहीं सकता है| क्योंकि अपने उत्तरदायित्वों एवं कर्तव्यों का वहन करके मनुष्य स्वयंअपनी संततियों एवं संपूर्ण पृथ्वी के अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है| अतः अनुसंधान द्वारा बालकों में पर्यावरण शिक्षा द्वारा आई जागरूकता की जांच करने के उपरांत ही यह ज्ञात हो सकता है कि भविष्य के शिक्षक ,डॉ , उद्योगपति ,गृहणी तथा अन्य व्यवसाय में लगने वाले लोग अपने पर्यावरण के प्रति मित्रवत व्यवहार करते हैं या नहीं|

समस्या- प्रस्तुत शोध का संपूर्ण अध्ययन मुख्यतः एक ही भाग में है, शोध कार्य का कार्य प्राथमिक स्तर के विद्याथियोंमें अभिभावकों में एवं शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करता है

जागरूकता - प्रस्तुत शोध में जागरूकता से तात्पर्य पर्यावरण को समझाने था समझदारी को बढ़ावा देने की प्रक्रिया से है पर्यावरण जागरूकता का अर्थ उस ज्ञान एवं आचरण से है जो प्रकृति से संबंध स्थापित कर प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है | संवेदना के अनुसार आचरण को संतुलित कर संसाधनों का उपयोग करता है| पर्यावरणीय बोध के आभाव सेजल ,हवा ,मिट्टी और वनस्पति तक प्रदूषित हो रहे हैं ,जो मानव जीवन के आधार होते हैं | पर्यावरण जागरूकता शिक्षा का अंग नहीं है, इसका संबंध मानवीय संस्कार से है ,प्रत्येक सभ्य एवं संस्कृत परिवार अपने शिष्यों को प्रकृति के तथ्यों का ज्ञान कराता है | पर्यावरण जागरूकता का आधार बनाता है

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पर्यावरण की श्रृंखला संवेदनशील होती है,इस श्रृंखला की कड़ी को चोट पहुंचाने पर व्यापक प्रभाव होता है |अतः पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए पर्यावरण बोध बहुत आवश्यक है

समस्या का कथन – "प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों ,शिक्षकों एवं अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन"

अध्ययन का उद्देश्य-

1- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना |

2- प्राथमिक स्तर के परिषदीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना |

3- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता काअध्ययन|

4- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के महिला एवं पुरुष अभिभावकों का पर्यावरण केप्रति जागरूकता का अध्ययन |

5- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

6- प्राथमिक स्तर के केन्द्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना|

परिकल्पनाएं-

1- प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं 0.01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित की गई हैं

प्राथमिक स्तर के केंद्रीय विद्यालय के छात्र एव छात्राओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2- प्राथमिक स्तरके परिषदीय विद्यालय के छात्र एव छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है

3- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं|

4- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के महिला एवं पुरुष अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है

5- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

6- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाये-

1- प्रस्तुत अध्ययन केवल इलाहाबाद जनपद के प्राथमिक स्तर के केंद्रीयता परिषदीय विद्यालय के विद्यार्थियों का ही किया गया है |

2- प्रस्तुत अध्यन हिंदी माध्यम के तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का ही किया गया है।

अध्ययन की विधि: - प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में, अभिभावकों में एवं शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। अतः इस समस्या के स्वरूप व प्रकृति को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है|

जनसंख्या और न्यादर्श- इलाहाबाद जिले के सभी प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी अभिभावक एवं शिक्षक प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के अंतर्गत आते हैं प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए न्यादर्श की विभिन्न विधियों में से बहु स्तरीय याद्दच्छिक न्यादर्श विधि को आधार बनाया गया है| कुल 3 विद्यालयों में से 100 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया है इन्हें केंद्रीय एवं परिषदीय विद्यालय के आधार पर 50 - 50 की संख्या में बांटा गया है| कुल 3 विद्यार्थियों के प्राथमिक स्तर के 50 अभिभावकों को लिया गया है इन्हें केंद्रीय तथा परिषदीय अभिभावकों के आधार पर 25 25 की संख्या में बांटा गया है| कुल 3 विद्यालय के प्राथमिक स्तर के 50 शिक्षकों को लिया गया है इन्हें केंद्रीय तथा परिषदीय शिक्षकों के आधार पर 21-25 की संख्या में बांटा गया है

प्रयुक्त सांख्यकीय विधि - पर्यावरण जागरूकता का आकलन करने हेतु छात्र एवं छात्राओं शिक्षकों अभिभावकों मे क्रमशः केंद्रीय परिषद तथा महिला एवं पुरुष के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु मध्यमान मानक विचलन तथा टी टेस्ट का प्रयोग किया गया

प्रस्तुत शोध का विश्लेषण-

प्राथमिक स्तरमें केंद्रीय विद्यालय के छात्र एवम छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तालिका-

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	मानक त्रुटी	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारणी मान
छात्र/छात्राएं	25/25	12/10.6	1.86/1.34	1.4	0.5299	2.64	0.01	2.68

प्राथमिक स्तर के परिषदीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तालिका-

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	मानक त्रुटी	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारणी मान
छात्र/छात्राएं	25/25	5.88/5.4	3.81/2.05	.44	.882	.5454	0.01	2.68

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राथमिक स्तर के केंद्रित तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तालिका-

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	मानक त्रुटी	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारणी मान
के.वि.अभि./परिषदीय वि. के अभि.	25/25	11.2/10.2	1.72/1.16	1	.516	2.36	0.01	2.68

प्राथमिक स्तर की केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के महिला तथा पुरुष अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तालिका –

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	मानक त्रुटी	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारणी मान
पु.अभी./म.अभि.	28/22	7.75/6.59	2.75/1.36	1.16	.604	1.92	0.01	2.68

प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तालिका-

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	मानक त्रुटी	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारणी मान
के.वि के शिक्षक/परिषदीय वि. के शिक्षक	30/20	21.2/19.75	4.64/2.16	1.45	.9939	1.46	0.01	2.68

प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत महिला तथा पुरुष शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तालिका-

प्रतिदर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	माध्य अंतर	मानक त्रुटी	टी-मान	सार्थकता स्तर	सारणी मान
पु. शिक्षक/ म. शिक्षक	33/17	21.04/20.00	2.36/2.02	1.04	.655	1.587	0.01	2.68

प्रस्तुत शोध के लिए परिकल्पना का निर्माण किया गया है जिसका 0.01 मेरा यह सार्थकता स्तर पर अंतर कुछ इस प्रकार है-

परिकल्पना 1- प्राथमिक स्तरमें केंद्रीय विद्यालय के छात्र एवम छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है | परिकल्पना का परीक्षण दो मध्य मानों के मध्य अंतर की सार्थकता के आधार पर किया गया

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जिसने परिगणित t का मान 2.64 है यह मान.01 सार्थकता स्तर पर df 48 के सारणी मान 2.68 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गयीं। इसका अर्थ यह हुआ कि छात्र एवम छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 2- प्राथमिक स्तर के परिषदीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है उपयुक्त परिकल्पना का परीक्षण दो मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के आधार पर किया गया है ।जिसमे t का मान .5454 था । यह मान .01 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए सारणी मान 2.68 से कम है । अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई इसका अर्थ यह हुआ कि परिषदीय विद्यालय के छात्र -छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 3- प्राथमिक स्तर के केंद्रित तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है । इस परिकल्पना का परीक्षण दो मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के आधार पर किया गया है ।इसमें t का मान 2.36 ज्ञात हुआ यह मान .01 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए सारणी मान 2.68 से कम है । अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई इसका अर्थ यह हुआ कि छात्रों के अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

परिकल्पना 4- प्राथमिक स्तर की केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के महिला तथा पुरुष अभिभावकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण दो मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के आधार पर किया गया है इसमें t का 1.92 ज्ञात हुआ ।यह मान .01 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए सारणी मान 2.68 से कम है । अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई इसका अर्थ यह हुआ कि छात्रों के महिला तथा पुरुष अध्यापकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है

परिकल्पना 5- प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण दो मध्यमानों के अंतर की सार्थकता के आधार पर किया गया है।इसमे t का मान 1.68 ज्ञात हुआ ।यह मान .01 सार्थकता स्तर पर df 48 के लिए सारणी मान से कम है । अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई इसका अर्थ यह हुआ कि केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नही है ।

परिकल्पना 6 - प्राथमिक स्तर के केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत महिला तथा पुरुष शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस परिकल्पना का परीक्षण दो मध्यमानो के अंतर की सार्थकता के आधार पर किया गया है ,इसमे t का मान 1.58 ज्ञात हुआ ।यह मान .01 सार्थकता स्तर पर df48 के लिए सारणी मान 2.68 से कम है ।अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई । इसका अर्थ यह हुआ कि केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय में कार्यरत महिला तथा पुरुष शिक्षकों का पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष-

1- इस संबंध में कुल प्राप्तांकों पर दृष्टिपात करने से यह रोचक तथ्य सामने आता है कि के केंद्रीय विद्यालय के छात्र छात्राओं तथा परिषदीय विद्यालय के छात्र छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात सभी छात्र छात्राएं लगभग समान रूप से जागरूक हैं।

2- दूसरा तथ्य यह सामने आता है कि केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय के छात्रों के अभिभावकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात सभी अभिभावक समान रूप से जागरूक हैं तथा केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय के छात्रों के महिला तथा पुरुष अभिभावकों के जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात महिला तथा पुरुष अभिभावक समान रूप से जागरुक हैं।

3- तीसरा तथ्य सामने आता है कि केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय के शिक्षकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात शिक्षक लगभग समान रूप से जागरूक हैं तथा केंद्रीय तथा परिषदीय विद्यालय के महिला तथा पुरुष शिक्षकों में भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात महिला तथा पुरुष शिक्षक समान रूप से जागरूक हैं।

शैक्षिक निहितार्थ-

1- परिषदीय विद्यालय के छात्र छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

2- केंद्रीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के स्तर को ऊंचा उठाना चाहिए|

3- पर्यावरण के जागरूकता के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की जा सकती है।

4- उनकी शिक्षा को विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में समाहित कर विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति समालोचनात्मक प्रवृत्ति विकसित की जा सकती है।

5- पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से समाज के सभी वर्गों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता को विकसित की जा सकती है।

6- पर्यावरण प्रदूषण ड्रा करने के लिए विकल्पों का प्रयोग छात्रों द्वारा कराया जा सकता है जैसे विद्यालय के प्रोजेक्ट C

7- पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने के लिए विद्यालय में अनेको कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं जैसे विज्ञान परिषद का गठन विज्ञान मेले का आयोजन विज्ञान क्लब पर्यटन का आयोजन आदि।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

Angell, T. Ferguson 2001. Better test score through environmental education

Hoody, L. 1995. Education efficacy, of environmental education

Palmer, J.A. 1998. Environmental in the 21st Century. Theory, Practice, progress and promise. London: Routledhe

Joseph,l.A. victoriya, EA, compbed, (2004)

UNESCO,1974 report on the seminar on EE. National commission for unesco.

Sharma R.A envirmental educational research R.lall book depot meerut (2004)

दूबे सत्य नारायण (२००१) — पर्यावरणीय षिक्षा

सक्सेना एस० सी० (१९८९) — पर्यावरण एवं प्रदूशण का खतरा

सिंह रविन्द्र (२०००) — पर्यावरण भूगोल का संस्करण

सिंह काषीनाथ एवं सिंह जगदीष (१९९६)— आर्थिक भूगोल के मूल तत्व

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies